57

नगर के विनाश से पहले का हाल

(24:4-14)

मसीह ने अपना संदेश कई ''अ-चिह्नों'' के साथ आरम्भ किया। यहूदियों के लिए यरूशलेम का विनाश ऐसी सदमा पहुंचाने वाली घटना होनी थी कि यीशु की भविष्यवाणी के पूरा होने की राह देखने वालों को लग सकता था कि कुछ भी या हर बात होने वाली बात का चिह्न था। मसीह नहीं चाहता था कि उसके चेले भरमाए जाएं, जिस कारण उसने भरमाने वाले सम्भव चिह्नों के प्रति उन्हें पहले से चौकस कर दिया।

''भरमाए न जाओ'' (24:4-8)

4यीशु ने उन को उत्तर दिया, ''सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए, 5क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, मैं मसीह हूं, और बहुतों को भरमाएंगे। 6तुम लड़ाइयों और लडाइयों की चर्चा सुनोगे, देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। 7क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह-जगह अकाल पडेंगे, और भूकम्प होंगे। 8ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी।''

आयतें 4, 5. *झूठे मसीह।* **यीशु ने** अपने चेलों को बताया कि मसीहा का ढोंग करने वाले झूठे मसीहों से भरमाए न जाएं (देखें 24:23, 24)। **बहुत से** लोगों ने चाहे इन पाखण्डियों के पीछे चल पड़ना था, पर प्रभु के चेलों को ऐसा न करने को कहा गया। 16:13-20 से सम्बन्धित वाक्यों के बाद से चेलों को समझ आ गया था कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है, पर आने वाले दिनों में उनका विश्वास बुरी तरह से परखा जाना था। उनके लिए अपने अगुवे की हानि से निपटना चुनौती होना था जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। जी उठने से उन सब समस्याओं का समाधान नहीं मिलना था जो उनके सामने आने वाली थीं।[1]

पहली सदी के दौरान **बहुत से** झूठे मसीहा और अन्य विद्रोही नेता उठे जो आम तौर पर अपने इर्द-गिर्द सेना इकट्ठी कर लेते थे। रब्बान गमलीएल ने थियुडास और गलीली यहूदा नामक दो लोगों की बात की है। अन्त में वे मार डाले गए और उनके अनुयायी बिखर गए (प्रेरितों 5:36, 37)।[2] प्रेरितों के काम में एक मिस्री का नाम है जो चार हज़ार आतंकवादियों को जंगल में ले गया (प्रेरितों 21:38)।[3] ऐसे मामलों में यह तय करना कठिन हो सकता है कि वे अपने आपको **मसीह** मानते भी थे या नहीं। परन्तु और लोग मानते थे। डोनल्ड ए. हैग्नर ने कहा कि मसीहा का पद होने का दावा करने वाले किसी व्यक्ति का पक्का प्रमाण बार कोखबा तक नहीं मिलता (ई. 135)।[4]

आयतें 6, 7. *लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा और प्राकृतिक आपदाएं।* यीशु ने अपने लोगों को यह कहते हुए चेतावनी दी, "**तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे।**" भाषा यह संकेत देती है कि लड़ाइयों में उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भाग नहीं लेना था, परन्तु ऐसे झगड़ों की बातें सुनना व्यक्ति को परेशानी में और घबराहट में डाल सकता है। इसलिए प्रभु ने कहा, "**देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।**" 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश से पहले कई लड़ाइयां हुईं। वास्तव में इससे पहले के वर्ष, ई. 69 को "चार सम्राटों का वर्ष" कहा जाता है। इसमें गृहयुद्ध और खूनखराबा हुआ था। नीरो की मृत्यु के बाद गलबा, ओथो और विटेलियुस तीन लोगों ने थोड़े समय के लिए शासन किया।[5] विस्पेसियन ने सिंहासन पर बैठने के लिए वास्तव में यरूशलेम की घेराबंदी छोड़ दी।[6] चेलों ने केवल ऐसी खबरें सुनकर यह निष्कर्ष नहीं निकाला था कि अन्त (telos) आ गया है (देखें 24:3)।

यीशु ने आगे कहा, "**क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे।**" 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी से बहुत पहले यरूशलेम अशांति से परेशान था, इसलिए यीशु के मन में यहूदिया को प्रभावित करने वाली लड़ाइयां हो सकती हैं।

रॉबर्ट ए. गुलिक ने रोम और यहूदियों के बीच युद्ध का कारण बनने वाली कुछ विशेष घटनाओं को प्रकाशमान किया है।[7] रोमी शासक फलोरस (64-66 ई.) की क्रूरताओं ने लड़ाई का मंच तैयार किया (66-74 ई.)।[8] उसने यहूदियों के विरुद्ध अधिकारों में यूनानियों का साथ दिया। उसने सरकारी खर्चों को कम करने के लिए मन्दिर के पवित्र भण्डार में से धन भी लिया और फिर विरोध करने वालों को पकड़कर क्रूस पर चढ़ा दिया।[9] जब फलोरस ने सिपाहियों के दो दसते यरूशलेम भेजे तो यहूदियों ने उन्हें अंटोनिया के किले तक जाने से रोका। इस लड़ाई से कई लोग मारे गए।[10]

रोमी सम्राट सहित अन्यजातियों के लिए बलिदान भेंट करना बन्द करके यहूदियों ने बदला ले लिया।[11] इस कार्य को राजद्रोह माना गया। यहूदी विद्रोहियों ने कई मोर्चों पर रोमियों पर हमला किया, जिससे मसदा, मुकेरस सहित सामरिक महत्व के किलों पर कब्जा कर लिया गया।[12] कैसरिया, दिकापुलिस और सीरियाई नगरों में भी हिंसा भड़क उठी थी।[13]

यहूदियों में इस उथल-पुथल के समयों को बड़ा विरोध माना गया। गुलिक ने लिखा है, "एक ओर चरमपंथी और नरमपंथी अर्थात लड़ाई वाला पक्ष और शांति वाले पक्ष के बीच राजनैतिक शक्तियां बंट गई थीं।" दूसरी ओर चरमपंथी न केवल नरमपंथियों में बल्कि अपने आप में भी बंट गए थे।[14]

प्राचीन इतिहासकारों ने यीशु की भविष्यवाणी और यरूशलेम के पतन के समय के बीच रोमी जगत में कई "अकालों और भूकम्पों" की बात लिखी है। उदाहरण के लिए लूका ने लगभग 46 ई. के आस पास एक अकाल की बात लिखी (प्रेरितों 11:28), जो जोसेफस की बात से मेल खाता है।[15] एक और अकाल क्लौदियुस के शासनकाल में पड़ा, जिसका उल्लेख टेसिटुस और सियुटोनियुस दोनों ने किया है।[16] यरूशलेम पर रोमी कब्जे के कारण, शहरपनाह के अन्दर कई गरीब भूख से मर गए। जोसेफस ने कहा है कि अकाल से कम से कम छह लाख

जानें गईं,[17] चाहे उसकी गिनती बढ़ा-चढ़ाकर की गई हो।

यीशु की भविष्यवाणी और यरूशलेम के पतन के बीच रोमी जगत में कई भूकम्प आए। अन्य भूकम्पों के साथ आसिया के इलाके में लौदीकिया में और इटली में पौंपे में (ई. 62)।[18] अपोकलिपटिक साहित्य में भूकम्पों का उल्लेख बार-बार ईश्वरीय न्याय के प्रतीकों के रूप में दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 6:12; 8:5; 11:13, 19; 16:18)। इस सूची में लूका 21:11 "आकाश से भंयकर बातें और बड़े-बड़े चिह्नों" के साथ-साथ "महामारियां" भी जोड़ देता है।

आयत 8. यीशु ने इन घटनाओं को **पीड़ाओं का आरम्भ** ही बताया। चेलों ने लड़ाइयां, अकाल और भूकम्प की खबरें भी सुननी थीं पर यह उनके लिए चेतावनी नहीं होनी थी। ये घटनाएं तो भविष्य में होने वाली घटनाओं से पहले होने वाली घटनाएं ही थीं। बाइबल में कई बार ईश्वरीय न्याय के कारण अचानक और बड़े संकट का संकेत देते हुए गर्भवती स्त्री का रूपक दिया गया है।[19] रब्बी लोग मसीहा के आने के सम्बन्ध में जब "जनने की पीड़ाएं" कहते तो वे उन दुखों की बात कर रहे होते थे, जो मसीहा के आरम्भिक आगमन से पहले यहूदियों पर आने थे।[20] इस संदर्भ में यीशु ने यरूशलेम पर ईश्वरीय न्याय के सम्बन्ध में शब्द का इस्तेमाल किया, जो उसके द्वितीय आगमन से पहले होना था।

"उन कई परीक्षाओं से सावधान, जो तुम पर आने वाली हैं" (24:9-14)

9"तब वे क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे, और मेरे
नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। 10तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और
एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। 11बहुत से झूठे भविष्यवक्ता
उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। 12अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो
जाएगा, 13परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। 14और राज्य का यह
सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त
आ जाएगा।"

आयत 9. यीशु ने अपने चेलों को इस बारे में सावधान किया कि उनके साथ कैसे व्यवहार किया जाना था। यह कहने के बाद कि उन्हें **क्लेश** के लिए दिया जाएगा, यीशु ने बताया कि उसके कहने का क्या अर्थ था। वह समय के अन्त में क्लेश के काल की नहीं बल्कि उन सतावों की बात कर रहा था, जो प्रेरितों के ऊपर आने थे। उन्हें स्थानीय कचहरियों (महासभाओं), हाकिमों और राजाओं के सामने पेश किया जाना था। उनके ऊपर आराधनालय में कोड़े मारे जाने, जेल में डाला जाना और मृत्यु तक आनी थी (मरकुस 13:9)। यह सब उनके द्वारा किए जाने वाले सुसमाचार के प्रचार के कारण होना था (10:17, 18; 23:34 पर टिप्पणियां देखें)।

प्रभु ने यह भी घोषणा की, **"मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे"** (10:22 पर टिप्पणियां देखें)। 64 ई. में मसीही लोगों पर नीरों द्वारा किए जाने वाले सताव की बात लिखते हुए टेसिटुस ने उन्हें "बुरी तरह से वंचित लोग" उनके धर्म को "बहुत बड़ा

अंधविश्वास'' और उनकी प्रथाओं को ''विकृत और अपमानजनक'' के रूप में दिखाया। चाहे वे रोम को आग लगाने के दोषी नहीं थे, इसके बावजूद नीरो ने ''मनुष्यजाति उन से घृणा करती थी'' के कारण उन पर दोष लगाया होगा।[21]

आयत 10. यीशु ने अन्य घटनाओं की जो इस समय के दौरान होनी थी भविष्यवाणी की: कई मसीही लोगों ने **ठोकर** खानी थी (*skandalizō*), बहुत सम्भावना सताव के कारण थी (देखें 1 पतरस 1:6, 7; 4:12–19)। उन्होंने **एक दूसरे को पकड़वा** देना था। एच. लियो बोल्स ने लिखा है:

> सताव के लिए सौंपे जाने के बाद बहुतों ने ठोकर खानी थी; कइयों ने उन भयंकर सतावों से बचने के लिए जो उन पर लादे गए थे, विश्वास से फिर जाना था। कई चेलों ने तो दूसरे चेलों को पकड़वा देना था और उन्हें सताने वालों के हाथ सौंप देना था।[22]

आयत 11. बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होने थे जिन्होंने चेलों को अपने पीछे लगा लेना था। आरम्भिक कलीसिया पर झूठे नबियों की मार पड़ी थी। पौलुस ने ''उन झूठे भाइयों'' के बारे में लिखा ''जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिलाती है, भेद लेकर हमें दास बनाएं'' (गलातियों 2:4)। उसने एक विश्वासत्याग की बात भी लिखी, जो होने वाला था और कहा कि ''अधर्म का भेद'' उस समय भी ''कार्य करता जाता'' था (2 थिस्सुनीकियों 2:3, 7)। पतरस ने उन झूठे शिक्षकों के प्रति चौकस किया जिन्होंने ''नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर'' करना था और ''उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे'' (2 पतरस 2:1)। यूहन्ना ने मसीह विरोधी की बात की और कहा कि ''कई'' मसीही विरोधी उनके बीच में पहले ही आ चुके थे (1 यूहन्ना 2:18, 19)। उसने यह भी चेतावनी दी ''बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। तब से लेकर संसार ने कई और झूठे भविष्यवक्ता देखे हैं।

आयत 12. यीशु ने कहा कि यरूशलेम के विनाश से पहले **अधर्म** बढ़ जाना था। बहुत से मसीही लोगों का मसीह और कलीसिया के लिए ***प्रेम ठण्डा हो*** जाना था। इसका एक और उदाहरण प्रकाशितवाक्य में मिलता है जहां यीशु ने इफिसुस के विश्वासियों को डांट लगाई क्योंकि ''[उन्होंने] अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया'' था (प्रकाशितवाक्य 2:4)।

आयत 13. विश्वासत्याग के कई स्तरों पर चर्चा करने के बाद प्रभु ने अपने चेलों को आश्वस्त किया कि **जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा**। इस प्रतिज्ञा में विश्वासी के लिए सदाकाल का उद्धार है। ''जीवन का मुकुट'' पाने के लिए ''प्राण देने तक विश्वासी'' रहना आवश्यक है (प्रकाशितवाक्य 2:10; NIV)। इस आयत में ''अन्त'' (*telos*) शब्द व्यक्ति के शारीरिक जीवन के अन्त के लिए होगा, चाहे आयत 3 में इसे ''जगत के अन्त'' के लिए गया है (10:22 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 14. यीशु ने आगे कहा, **''राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।''** यह मानते हुए कि ''सारे जगत'' (*oikoumenē*) और ''अन्त'' (*telos*) शब्दों की परिभाषा कैसे दी जाती है, इस

आयत की व्याख्या दो प्रकार से हो सकती है। एक सम्भावना यह है कि प्रभु की बात का संकेत है कि उसके द्वितीय आगमन और युग के अन्त से पहले संसार के सब रहने वालों में सुसमाचार सुना दिया जाना था। इस स्थिति ''अन्त'' का अर्थ वही होगा, जो आयत 3 में है।

इससे अधिक सम्भावना यह लगती है कि यरूशलेम का विनाश होने से पहले सुसामचार सारे रोमी जगत[23] में सुना दिया जाना था। पिन्तेकुस्त के दिन, यहूदी और सारे रोमी जगत में से यहूदी मत धारण करने वाले लोग यरूशलेम में थे (प्रेरितों 2:5–12), और उन्हें सुसमाचार को सुनने और मानने का अवसर मिला था। इसके अलावा सताव के कारण यरूशलेम से तितर बितर हुई कलीसिया यहूदिया और सामरिया के इलाकों में सुसमाचार के फैलने का कारण बनी (प्रेरितों 8:4)। फिर प्रेरितों के यात्राएं करने से भी रोमी साम्राज्य में सुसमाचार फैलकर कई विदेशी देशों में भी पहुंच गया। लगभग 57 ई. में पौलुस ने भजन संहिता 19:4 में से उद्धृत करते हुए कहा, ''उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं'' (रोमियों 10:18)।[24] बाद में लगभग 62 ई. के पास पौलुस ने ''सुसमाचार जो तुम्हारे पास पहुंचा है और जैसा जगत में भी'' की बात की और कहा कि यह ''आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में'' सुना दिया गया है (कुलुस्सियों 1:5, 6, 23)। यीशु यही कह रहा होगा कि पुराने प्रबन्ध के केन्द्र यरूशलेम के 70 ई. में नष्ट होने से पहले पहले नये प्रबन्ध का संदेश रोमी साम्राज्य में पहुंच जाएगा।

टिप्पणियां

[1]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्रॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 597. [2]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 17.10.5; 20.5.1. जोसेफस ने या तो अलग थियुदास की बात की या उसने कालक्रम को उलझा दिया। [3]वही, 20.8.6. [4]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 691. [5]सियुटोनियुस *ट्वेल्व सीज़र* 7.18–22; 8.5–12; 9.7–18. [6]वही, 10.4–8. [7]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैकनाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 172 में रॉबर्ट ए. गुलिक. ''डिस्ट्रक्शन ऑफ़ जेरूसलेम।'' [8]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 20.11.1. [9]जोसेफस *वार्स,* 2.14.6–8. [10]वही, 2.15.5.

[11]वही, 2.17.2, 3. [12]वही, 2.17.2, 7, 8; 2.18.16. [13]वही, 2.18.1–5. [14]गुलिक, 173. [15]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 3.15.3. [16]टेसिटुस *ऐनल्स* 12.43; सियुटोनियुस *टवैल्व सीज़र्स* 5.18. [17]जोसेफस *वार्स* 5.13.7. [18]टेसिटुस *ऐनल्स* 14.27; 15.22. [19]भजन संहिता 48:6; यशायाह 13:8; 21:3; 26:17; 42:14; यिर्मयाह 4:31; 6:24; 13:21; 22:23; 30:6; 31:8; 48:41; 49:22, 24; 50:43; होशे 13:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:3. [20]टालमुड *केटुबोथ* 111ए; *सेन्हड्रिन* 97बी, 98बी; *शब्बथ* 118ए।

[21]टेसिटुस *ऐनल्स* 15.44. [22]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्रॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 461–62. [23]*Oikoumenē* के इस अर्थ के लिए देखें लूका 2:1. पहली सदी के दौरान रोमियों को ''सारे संसार के हाकिम'' माना जाता था। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 15.11.1.) [24]बाद में रोमियों के नाम पत्र में पौलुस ने लिखा कि उसने ''यरूशलेम से लेकर चारों ओर इलुरिकुन तक'' सुसमाचार प्रचार कर दिया था, परन्तु स्पष्टतया अभी वह स्पेन नहीं गया था (रोमियों 15:19, 24, 28)।